पाठ 7

सहयोग का पुल

नालपुर गाँव पहाड़ियों और जंगल के बीचों-बीच बसा हुआ था। नाले के कारण ही गाँव का नाम नालपुर रखा गया था। नाले ने गाँव की प्रगति को रोक रखा था। बरसात में उसका रूप इतना भयानक होता था कि उसमें पाँव डालने तक की हिम्मत नहीं होती। चौमासे भर यह लम्बा-चौड़ा नाला गाँव को पूरी तरह अन्य इलाकों से काट कर रख देता था। चार महीने नालपुर गाँव के निवासी बाहरी दुनिया से एकदम अलग हो जाया करते थे। जब चौमासे में कोई गंभीर बीमारी का शिकार होता, किसी महिला की तबीयत बिगड़ जाती तब बड़ी परेशानी होती। ऐसे मौके पर जब मरीज को अस्पताल पहुँचाना बहुत जरूरी होता, तब सामने बहता हुआ नाला, नालपुर के ग्रामवासियों को साक्षात् यमदूत की तरह लगता था। कभी-कभी डोंगा या कश्ती डालकर पार उतरने की कोशिश भी की गई पर तेज बहाव ने अच्छे - अच्छे लोगों को डुबो दिया। लच्छू काका से पूछकर देखिए तो वे फौरन बगता किसान का किस्सा सुना देंगे, जिसे बरसात में साँप ने काटा था और नाले ने

शिक्षण संकेत

- कहानी का आदर्श वाचन करें तथा बच्चों से भी कराएँ।
- कहानी में आए कठिन शब्दों को बच्चों की सहायता से स्पष्ट करें।
- बच्चों को स्वावलम्बन और सहयोग का महत्व समझाएँ।

अस्पताल तक नहीं पहुँचने दिया। देखते-ही-देखते बेचारे के प्राण पखेरू उड़ गए।

नालपुर की आबादी बस्ती कहलाने लायक ही थी। गाँव में घास-फूस की छत एवं कुछ कच्चे-पक्के मकान थे। बिजली पानी की सुविधा आखिर यहाँ कैसे आ पाती कुल मिलाकर गाँव बहुत छोटा था। यहाँ पर सबकी अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग वाली बात थी, तब गाँव के विकास की बात कौन सोचे? बरसात में गाँव का नाला भले ही अभिशाप बन जाए लेकिन गाँव में कुँओं की कमी के कारण लोग अनी प्यास बुझाने के लिए इसी नाले के जल का उपयोग करते थे। गाँव के बच्चे और मवेशी गर्मी में एक साथ जल पान का आनंद लेते। यही कारण था कि गाँव में बीमारी और नाले के बीच एक गहरा रिश्ता बना हुआ था। पीलिया, पेचिश, हैजा, खुजली आदि बीमारियाँ नाले के गंदे पानी के द्वारा गाँव में घर-घर पहुँच जाती थी। अस्पताल गाँव से दूर था। बरसात में गाँव किसी द्वीप की तरह नाले के शिकंजे में फँस जाता था।

इस गाँव में थोड़ा पढ़ा-लिखा और समझदार युवक शिवनारायण था। नए जमाने की नई हवा और नई रीति, नए विचार इस युवक के मन में लहरा रहे थे। अपने गाँव के पिछड़ेपन से वह बहुत दुखी रहता था। उसने कई बार लोगों को संगठित करना चाहा कि सब आपस में मिलकर नाले पर पुल बनाने की कोशिश करें किन्तु सभी लोग एकमत न हो सके। शिवनारायण की बात का समर्थन यदि किसी ने किया तो वे थे हकीम साहब। ग्रामवासी हकीम साहब का बहुत सम्मान करते थे। वे उनकी छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज कर दिया करते थे। वे गाँववालों के लिए डूबते को तिनके का सहारा थे।

इस बरसात में नाला उफान पर था। गाँव दो माह से बाहरी दुनिया से कटा हुआ था। एक घटना से सारे गाँववाले दहल गए। रात में वृद्ध हकीम साहब को दिल का दौरा पड़ा। उनकी बेहोशी और बिगड़ती हालत देखकर सारे गाँववाले एकत्र हो गए। जैसे-तैसे रात कटी, सभी चाहते थे कि हकीम साहब को अस्पताल ले जाएँ या कस्बे से डॉक्टर को लेकर आएँ। लेकिन उनके चाहने से क्या होता? उफनता नाला सामने जो था। एक दो साहसी युवको ने नाला पार करने की कोशिश की लेकिन तेज बहाव में उनको लेने के देने पड़ गए। इसी बीच हकीम साहब इलाज के अभाव में चल बसे इस घटना से शिवनारायण सबसे ज्यादा दुखी हुआ आखिर वह बोल ही पड़ा ''अगर आप लोग समय रहते मेरी बात मान लेते तो यह नौबत न आती।'' उसी समय सभी गाँववालों ने कसम खाई कि अपने श्रमदान से नाले पर पुल बनाने की कोशिश करेंगे। गर्मी में जब नाले का पानी कम था, गाँववाले संगठित होकर पुल बनाने में जुट गए। गाँव का हर व्यक्ति अपने-अपने साधन लिए हुए पुल बनाने को तैयार था।

यह बात जब जिला अधिकारियों तक पहुँची तो उन्होंने गाँववालों का उत्साह देखकर शासन की ओर से तकनीकी और आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे ग्रामवासियों का उत्साह और बढ़ गया। महिला पुरुष सभी

उत्साह से श्रमदान में जुट गए । देखते-ही-देखते पुल के उद्घाटन की बात आई। शिवनारायण के साथ गाँव के बड़े-बूढ़े लोग जिलाध्यक्ष महोदय के पास गए और पुल के उद्घाटन हेतु निवेदन किया। जिलाध्यक्ष महोदय ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। पुल के उद्घाटन के दिन पुल को सजाया गया। गाँव में पहली बार इतना बड़ा आयोजन हो रहा था। गाँववालों ने अधिकारियों का स्वागत कर जिलाधीश महोदय से फीता काटकर पुल का उद्घाटन करने का अनुरोध किया। जिलाध्यक्ष ग्रामवासियों के आपसी सहयोग और श्रम देखकर बहुत खुश थे। उन्होंने कहा "पुल का उद्घाटन मैं नहीं, आप लोग स्वयं करेंगे।" उन्होंने गाँव के दो बुजुर्ग, दो युवा और दो महिलाओं को बुलाकर उन सभी को संयुक्त रूप से पुल का उद्घाटन करने को कहा। गाँव के छह प्रतिनिधियों ने एक साथ फीता काटकर पुल का उद्घाटन किया। अपने सम्बोधन में जिलाध्यक्ष ने कहा "इसका उद्घाटन मैंने आप लोगों से ही करवाया है क्योंकि यह आपके सहयोग से बना हुआ पुल है। इसमें आपका श्रमदान लगा है। गांधीजी भी तो यही कहा करते थे कि आपसी सहयोग और स्वावलम्बन से हम बड़ी से बड़ी कठिनाईयों को दूर कर सकते हैं। "सहयोग का पुल अब नालपुर की तरक्की के द्वार खोलेगा।"

▶ **महेश सक्सेना**

नए शब्द

प्रगति -उन्नति। **चौमासे**-बरसात के चार महीने। **प्राण पखेरु उड़ना**-मृत्यु होना। **मवेशी**-पशु। **दहलना**-डर से काँपना। **खेतिहर**-खेती करने वाला। **संगठित**-इकट्ठा होना। **उद्घाटन**-शुभारंभ **बुजुर्ग**-बड़े बूढ़े लोग। **कश्ती**-नाव। **स्वावलम्बन**-अपने ऊपर भरोसा करना

अनुभव विस्तार

1. कहानी से खोजकर लिखिए-

(क) सही जोड़ियाँ बनाइए-

नाला तेज गति से	-	इलाज करते हैं।
डॉक्टर एवं वैद्य	-	बहता था।
गाँव वालों ने मिलकर	-	बीमारियाँ फैलती हैं।
बरसात में	-	पुल बनाया था।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गाँव के पास.....बहता था।
2. ग्रामवासी नाला पार करने के लिए .....का प्रयोग करते थे।
3. बरसात में अधिक.....फैलती थी।
4. .....को उद्घाटन के समय सजाय गया था।

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए-

1. गाँव का नाम क्या था?
2. गाँव की प्रगति में क्या बाधा थी?
3. गाँव के लोग बरसात में नाला कैसे पार करते थे?
4. गाँव का पुल किस प्रकार बना?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए-

1. गंदे पानी से कौन-कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं?
2. ग्राम वासियों को बरसात में किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता था?
3. जिलाध्यक्ष ने पुल का उद्घाटन ग्राम प्रतिनिधियों से क्यों कराया?
4. गाँव वाले किस घटना से एकजुट हुए?

भाषा की बात

प्रश्न निम्नलिखित वाक्यों को पढ़े और समझें-

1. यहाँ पर सबकी <u>अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग</u> वाली बात थी।
2. वे गाँव वालों के लिए <u>डूबते को तिनके का सहारा</u> थे।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित अंशों को ध्यान से पढ़िए। मुहावरों के विपरीत इन वाक्यों के अर्थ अपने आप में भी स्पष्ट हैं। यहाँ इन वाक्यों का प्रयोग अपनी बात को और अधिक रोचक बनाने के लिए किया गया है।

जैसे- **'अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग'** का अर्थ है- अलग-अलग कार्य करना इसी प्रकार **'डूबते को तिनके का सहारा'** का अर्थ है-मुसीबत के समय छोटा सा सहारा भी महत्वपूर्ण होता है।

इस तरह के वाक्यों का प्रयोग लोग अपनी बातचीत के समय करते हैं, इसलिए लोक या संसार में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत भी कहते हैं। लोकोक्ति भी मुहावरों की तरह सामान्य अर्थ छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करती है।

लोगों द्वारा कहा गया विशेष या अनोखा वाक्य लोकोक्ति कहा जाता है।

लोकेक्तियाँ जीवन के अनुभवों और घटनाओं पर आधारित होती हैं। उदाहरण के लिए एक गद्यांश देखिए और लोकोक्तियों को जानिए-

हीरा गाँव का प्रगतिशील किसान है। उसे फसल से बहुत आमदनी हुई। उसने गेहूँ भी बेचे और भूसा भी बेचा इसे कहते हैं **आम के आम गुठलियों के दाम**। हीरा के लिए तो **काला अक्षर भैंस बराबर** था। पर उसने अपने बेटे श्याम को खूब पढ़ाया लिखाया। श्याम भी अपनी बातों से बड़े-बड़ों को चुप करा देता, कहा भी गया है **अक्ल बड़ी या भैंस**। श्याम को देखकर मुखिया के **सीने पर साँप लोट जाता था**। हीरा मन ही मन सोचता मुखिया से बैर लेने का मतलब है **जल में रहकर मगर मच्छ से बैर**।

प्रश्न - 1 उपरोक्त उदाहरण में निम्नलिखित लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। इन्हें आप अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

1. आम के आम गुठलियों के दाम
2. काला अक्षर भैंस बराबर
3. अक्ल बड़ी या भैंस
4. जल में रहकर मगरमच्छ से बैर

प्रश्न 2 लोकोक्तियों के सही अर्थ पर ☑ का चिह्न लगाइए-

(क) 'आ बैल मुझे मार' का अर्थ है-

(1) विपत्ति का आना (2) विपत्ति के पास जाना

(3) स्वयं विपत्ति को बुलावा देना

(ख) 'अक्ल बड़ी या भैंस' का अर्थ है-

(1) अक्ल से बड़ी भैंस होती है

(2) आकार की अपेक्षा बुद्धि बड़ी होती है।

(3) भैंस और बुद्धि बराबर होती है।

(ग) 'एक अनार सौ बीमार' का अर्थ है-

(1) जरूरत कम वस्तु ज्यादा

(2) जरूरत से ज्यादा वस्तुएँ

(3) वस्तु कम जरूरत ज्यादा

अब करने की बारी

1 अपने गाँव का अथवा अपने विद्यालय का नक्शा अपने गुरुजी या अन्य सदस्य की सहायता से बनाइए।

2 गाँव में कौन-कौन सी सुविधाएँ हैं? इनकी सूची बनाइए।

3 आप अपने गाँव के विकास के लिए कौन-कौन सी जरूरतें महसूस करते हैं? सूची बनाइए।

——— 0 ———